

## ब्रज के विरही लोग विचारे

आठवाँ प्रेमी-( आँखों से आँसुओं की झड़ी लग रही है,-  
नमस्कार करते हुए )

कृपानिधान साई ! मैंने भक्ति की भाँग पीकर सन्त सद्-  
गुरु साई की जय-जयकार मनायी और नींबू के पेड़ के नीचे बैठ-  
कर ध्यान लगाया । नाम-जप की एकाग्रता में बाह्य संसार खो  
गया और भगवान् की एक नवीन लीला का दृश्य दिखा । मैंने  
देखा कि बाबा नन्दराय गोपमण्डली और ग्वालबालों के साथ  
मथुरा से लौट रहे हैं, परन्तु प्यारे कन्हैया के साथ न आने के  
कारण उदास थके, चिन्तामग्न और दुःखी हो रहे हैं । वे सोच  
रहे हैं-“हाय ! हाय ! प्यारे कन्हैया के बिना मुझे अकेला देखकर  
महरिकी क्या दशा हो जायेगी ? वह जब मुझसे पूछेगी मेरा  
लाला कहाँ है ? तो मैं क्या उत्तर दूंगा ? वह सूना-सूना महल  
में कैसे देख सकूंगा ? हाय, हाय ! वसुदेव ने मेरी निधि लूट ली ।  
मैं भाग्यहीन-सा होकर लौट रहा हूँ । एक-एक क्षण का जीना  
भार हो रहा है । अब मैं जीकर क्या करूँगा ?” बाबा नन्दराय  
अचेत होकर गिर पड़े । श्रीउपनन्द आदि गोपों ने और ग्वाल-  
बालों ने संकीर्तन करना आरम्भ किया -“गोविन्द जय-जय  
गोपाल जय-जय, गोविन्द जय-जय गोपाल जय-जय ।” वे  
कुछ-कुछ सचेत हुए । कुछ सावधान से होकर बोले- “भैया, तुम  
लोग अब मुझे छोड़ जाओ । मैं किसी को मुख दिखाने लायक

नहीं हूँ । अब मैं इस जंगल में पड़ा रहूँगा और 'कृष्ण-कृष्ण' कहते हुए अपने जीवन का विसर्जन करूँगा । मेरे दादा वृषभानु से 'जयश्रीकृष्ण' कहकर पालागन करना । बेटा सुबल, तू मेरी आज्ञा मानकर पुत्रवियोगिनी दुःखिनी यशोदा की सेवा में संलग्न रहना । भला अब वह बेचारी कैसे जियेगी ? उसका तो इस बुढ़ापे में एकमात्र सहारा हमारा प्यारा दुलारा लाड़ला कन्हैया ही है । श्रीयशोदा ने मेरा विश्वासकर अपने जीवन की सम्पत्ति, निधि मेरे हाथों सौंप दी, परन्तु मुझसे उसकी रक्षा न हो सकी । मथुरावासियों ने धोखा देकर लूट लिया । तुम सदा उसी के पास रहना । धैर्य बँधाते रहना । सुबल, तुम कन्हैया की मैया से कहना कि-कन्हैया तुम्हारा ही है, तुम्हारा ही होकर रहेगा । कन्हैया अब भी देवकीनन्दन नाम सुनकर रोने लगता है । वह तो बहुत ही भोला-भाला है । शहर के चतुरचिकनियाँ लोगों ने उसे फुसलाकर रख लिया है । वह कर भी क्या सकता था ?" ऐसा कहते-कहते बाबा नन्दराय पुनः अचेत हो गये । उसी अवस्था में गोप और ग्वालबाल उन्हें घर ले आये । यह दुःखमयी घटना देखकर मैया को कुछ पूछने का भी अवसर नहीं मिला । वे जड़ कटे पेड़ की तरह "हाय-हाय" करके धड़ाम से धरती पर गिर पड़ीं । मैं भी रोता-रोता अचेत हो गया ।  
( सब सत्संगी रोते हैं । )

मैनें उस अचेतावस्था में देखा-महारानी श्रीयशोदा

उन्मादिनी होकर घर के कोने-कोने अपने कन्हैया को ढूँढ रही हैं ।

श्रीरोहिणीदेवी उन्हें सम्भाले हुए हैं । श्रीरोहिणीदेवी के सहारे-से मैया बैठी हुई हैं और उनके चरणों में सिर झुकाकर सुबल सखा रो-रोकर निवेदन कर रहा है- “अमर मैया, मीठी मैया ! आप धैर्य धारण करो । मैं आपके चरणकमलों के रज की शपथ लेकी कहता हूँ । मैं अभी मथुरा जाकर अवश्य-अवश्य प्यारे कन्हैया को लेकर आऊँगा ।” सुबल तत्काल मथुरा के लिये चल पड़ा । मैं भी “दादा कन्हैया ! दादा कन्हैया !!” कहता हुआ उनके पीछे चल पड़ा ।

अच्छा तो यह मथुरा है । नगर के दरवाजों पर पहरेदार खड़े हैं । किसी भी गोप या ग्वालबाल को भीतर जाने की आज्ञा नहीं है । अब क्या किया जाय ? झटपट सुबल दादा, भिखारी बन गये और छोटा-सा तानपूरा हाथ में लेकर उस उद्यान में जा पहुँचे जिसमें प्यारे कन्हैया प्रतिदिन टहलने के लिये आते । सुबल वहाँ बैठकर तानपुरे पर श्रीकिशोरीजू के मधुर नाम का गान करने लगा । उस ‘श्रीराधे श्रीराधे नाम में; इस मधुर से मधुर अमृत में, न जाने क्या मोहिनी शक्ति थी, जिससे खिंचकर प्यारे श्यामसुन्दर उन्मत्त दशा में ‘हा श्रीराधे’ ‘हा श्रीराधे’ कहते हुए वहाँ आ पहुँचे । पीताम्बर की सुध नहीं, बाल बिखरे और पाँव डगमग हो रहे हैं । वे भिखारी वेषधारी सुबल के पास आकर आर्तस्वर से बोले-“अरे भैया ! तुम कौन हो ? यहाँ कैसे

आये ? यह मधुर नाम तुमको किसने सिखाया ? इस नीरस मथुरा में यह स-रसनाम आजही सुनने को मिला है । तुमने मुझे जिला दिया । तुम्हें जो अभिलाषा हो-वह वर माँग लो । जो इस मधुर नाम का जप करता है, वह मुझे प्राणों से भी अधिक प्यारा है । तुम्हारी क्या इच्छा है ? मैं तुम्हारी प्रसन्नता के लिये सब कुछ कर सकता हूँ । यह मधुर नाम सुनकर मुझे अपनी प्राणप्रिया के मुखचन्द के दर्शन की तीव्र उत्कण्ठा जग उठी है । मैं अब मथुरा में नहीं रह सकता ।”

भिखारी सुबल ने रोते हुये कहा-“तब सरकार, आप यहाँ क्यों रह रहे हैं ? क्यों नहीं वहाँ जाते ? आपकी प्यारी मैया और बूढ़े पिता मृतप्राय हो रहे हैं, वे जल से बिछुड़ी मछली की तरह छटपटा रहे हैं । मैं आपसे भीख माँगता हूँ कि आप यदि सचमुच मुझपर प्रसन्न हैं, तो एक बार-केवल एक बार मेरे साथ चलकर उन्हें फिर से जीवन दान दें ।”

श्यामसुन्दर ने पूछा -“भैया तुम कौन हो ?” सुबल ने अपना परिचय दिया । प्यारे कन्हैया और सुबल दोनों एक-दूसरे से लिपट गये । बहुत देर तक दोनों ज़ोर-ज़ोर से रोते रहे और धैर्य धारण करके श्रीवृन्दावन के लिये चल पड़े । श्रीवृन्दावन में आकर बड़े आल्हाद से मीठी मैया और बाबा से मिले । आनन्द का समुद्र उमड़ पड़ा । सारा ब्रजमण्डल हरा भरा हो गया । श्रीयशोदामैया युगल को गोद में बिठाकर माखन मिश्री खिलाने लगी । मैंने देखा - उसी समय हमारे प्यार

बाबलसाईं अपने समाज के साथ मंगल बधाई देने के लिये  
वहाँ आये । श्रीब्रजराज दम्पति ने प्यारे साईं को रत्नजटित  
सिंहासन पर विराजमान किया और बहुत-बहुत आदर सत्कार  
किया । श्रीस्वामीजू युगलसरकार को गोद में बिठाकर दुलार  
करने लगे ।

युगलसरकार की जय हो !

बाबलसाईं की जय हो !!